हिवरेबाज़ार का चमत्कार

नवीन काले

महाराष्ट्र के अहमदनगर ज़िले में एक गांव हिवरेबाज़ार के कायाकल्प का चमत्कार एक दिन का काम नहीं है। परिवर्तन से होने वाले अच्छे परिणाम तो सबको चाहिए होते हैं, किंतु इस प्रक्रिया में बहुत संघर्ष करना पड़ता है। इस बदलाव को लाने के लिए कितना संघर्ष करना पड़ा होगा इसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है।

क्या आप सचमुच यह सोचते हैं कि इस देश का भविष्य पूरी तरह अंधकारमय है? यहां के लोग कभी नहीं सुधरेंगे? लोकतंत्र, कानून-व्यवस्था आदि बातों का कोई मतलब नहीं रह गया है? यदि आप ऐसा सोचते हैं तो यह लेख आपके लिए ही है।

क्या आपने हिवरेबाज़ार का नाम सुना है? शायद नहीं। महाराष्ट्र के अहमदनगर ज़िले का यह एक छोटा-सा गांव है। इसके विकास को समझने के लिए यह देखना होगा कि यह गांव 20 वर्षों पहले कैसा था।

गांव में शराब बनाने की कई भट्टियां थीं। यहां से आसपास के गांवों में शराब सप्लाई की जाती थी। हालत यह थी कि स्वच्छता, स्वास्थ्य, शिक्षा, आर्थिक स्थिरता जैसे शब्द सुनाई पड़ने की तो गुंजाइश ही नहीं थी। शासकीय कर्मचारियों का तबादला यहां सज़ा बतौर होता था। आम धारणा यही थी कि "कुछ नहीं हो सकता इस गांव का"।

जब मैं कह रहा हूं कि ऐसी हालत थी तो ज़ाहिर है कि अब स्थिति वैसी नहीं है। तो फिर कैसा है आजकल का हिवरेबाज़ार गांव?

गांव की आबादी लगभग 1400 है। गांव का एक भी वयस्क व्यक्ति बेरोज़गार नहीं है। गांव के सभी 226 परिवार आज आर्थिक रूप से सक्षम हैं। खेती और दूध उत्पादन प्रमुख व्यवसाय हैं। तीन परिवारों की सालाना आमदनी दस लाख रूपए से ऊपर है। महिलाएं भी इन व्यवसायों में बराबरी की हिस्सेदार हैं। गांव में गन्ने की खेती की पूरी तरह मनाही है क्योंकि इसमें बहुत अधिक पानी की आवश्यकता होती है। प्याज़ प्रमुख फसल है।

सालाना औसत वर्षा बहुत कम होने के बावजूद जल संग्रहण की योजनाओं के माध्यम से गांववासियों ने यह करिश्मा कर दिखाया है कि गांव के सभी कुंओं में साल भर पानी रहता है। इनके अलावा 16 हैण्डपम्प भी हैं। गांव से लगी पहाड़ी पर मवेशियों को चराना मना है। इससे गांव को पर्याप्त चारा तो मिल ही जाता है, आसपास के गांवों के लोग भी यहां से चारा ले जाते हैं। चराई रोकने का एक और फायदा होता है कि घास की वजह से पहाड़ी पर गिरने वाला वर्षा का पानी रुकता है और बहकर निकल जाने के बजाय ज़मीन में रिस जाता है।

संक्षेप में कहा जाए तो यह गांव सुजलाम्-सुफलाम् है।

जिस गांव में किसी ज़माने में केवल शराब बनाने की भट्टियां थीं वहां आजकल शराब तो दूर, पान, गुटका, बीड़ी-सिगरेट, तम्बाकू सभी पर पूरी तरह रोक लगा दी गई है। यह है सम्पूर्ण नशाबंदी।

गांव के सभी घरों को एक-सा रंगा गया है। हर घर के बाहर मकान मालिक का नाम सुंदर अक्षरों में लिखा है। गांव की सभी सड़कें सीमेन्ट-कांक्रीट से बनी हैं। हर घर में शौचालय है। कहना न होगा कि ग्राम स्वच्छता के सभी पुरस्कार इसी गांव को मिलते हैं।

गांव के किसी भी घर में भोजन बनाने के लिए चूल्हा नहीं जलाया जाता क्योंकि गांव में 130 बायोगैस संयंत्र लगे हुए हैं। गांव में एक सुंदर मांगलिक भवन बना हुआ है। गांव की ज़मीन बाहर के व्यक्ति को नहीं बेची जा सकती। यदि गांव का कोई व्यक्ति ज़मीन खरीदने में सक्षम न हो तो चार-छह ग्रामवासी मिल कर उसकी सहायता कर देते हैं, किंतु बाहरी व्यक्ति को खरीदने नहीं देते।

गांव का शाला भवन आकर्षक और साफ-सुथरा है।

इसमें एक बड़ा मैदान और मंच है। शाला भवन की दीवारें सुंदर चित्रों, जानकारी और सुविचारों से सजी हुई हैं। शाला से लगा हुआ रसोई घर है। शाला की दीवार पर पूरे सप्ताह का भोजन का मीनू लगा होता है। इसमें यह भी लिखा होता है कि किस पदार्थ में कौन-से पौष्टिक तत्व हैं। एक दीवार पर शाला भवन का नक्शा लगा है। लड़कियों और लड़कों के लिए अलग-अलग शौचालय तो हैं ही, विकलांग बच्चों के लिए एक अलग शौचालय है। शौचालयों के भीतर यह सूचना लिखी है कि उपयोग के बाद पानी डालना न भूलें। शाला में उपस्थिति 100 प्रतिशत रहती है। हर कक्षा के लिए पंचायत की ओर से एक किट दिया गया है। इस किट में पाउडर, तेल, साबुन, और नाखून काटने का यंत्र (नेल कटर) होता है।

महाराष्ट्र के अधिकांश गांवों में गणेशोत्सव ज़ोर-शोर से मनाया जाता है। छोटे गांवों में भी मोहल्ले-मोहल्ले में अलग-अलग गणेश मूर्तियां स्थापित की जाती हैं। किंतु यह हिवरेबाज़ार की विशेषता है कि पूरे गांव में एक ही गणेश प्रतिमा स्थापित की जाती है। यह गांव के लोगों के आपसी सहयोग का उम्दा उदाहरण है।

गांव की काफी सड़कें गांव के लोगों ने श्रमदान से बनाई हैं। यदि गांव के किसी युवक की शादी तय होती है तो उसका और उसकी होने वाली पत्नी का एचआईवी जांच प्रमाण पत्र पंचायत के समक्ष अनिवार्य रूप से प्रस्तुत करना होता है। गांव में अस्पताल नहीं है क्योंकि यहां कोई बीमार ही नहीं होता। एक बार एक डॉक्टर ने गांव में अस्पताल शुरू किया था, किंतु गांव में मरीज़ न होने के कारण उसे जल्दी ही बोरिया-बिस्तर समेटना पड़ा। यह कोई चमत्कार नहीं है बल्कि गांव के लोगों द्वारा सफाई और स्वास्थ्य के आपसी सम्बंध को पहचान लेने का नतीजा है।

गांव के सरपंच पोपटराव पंवार और उनके सहयोगियों द्वारा किया गया यह चमत्कार एक दिन का काम नहीं है। परिवर्तन से होने वाले अच्छे परिणाम तो सबको चाहिए होते हैं, किंतु इस प्रक्रिया में बहुत संघर्ष करना पड़ता है। पोपटराव और उनके साथियों को इस बदलाव को लाने के लिए कितना संघर्ष करना पड़ा होगा इसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है।

इस छोटे से गांव से देश के महानगरों में रहने वाले लोगों को क्या संदेश मिलता है? क्या ऐसे लोग अपनी कॉलोनी को, अपने मोहल्ले को साफ नहीं रख सकते? क्या पर्यावरण को बचाने के लिए कोई प्रयास नहीं कर सकते?

आज तक लाखों लोग हिवरेबाज़ार देख चुके हैं। पोपटराव और उनके सहयोगियों का उत्साह आज भी बरकरार है। पोपटराव के पास बैठकर उनके विचार सुनना बहुत अच्छा लगता है। वे कहते हैं, "विकास के लिए पैसों की बहुत अधिक आवश्यकता नहीं होती। जरूरत होती है अपनी मानसिकता बदलने की। मानसिकता बदल जाए तो आगे के सारे काम आसान हो जाते हैं।" हिवरेबाज़ार को देख कर लगता है कि कुछ हो सकता है इस देश का। यदि यह लेख पढ़कर आपको भी ऐसा लगा हो तो संघर्ष की राह पर पहला कदम आप चल चुके हैं। बधाई! ***(स्रोत फीचर्स)***

वर्ग पहेली 60 का हल

हा	ल्डे	न			अ	व	सा	द
इ		र	तौं	धी			र	
ज़े	ब्रा			र		मा	स	
न		स्व	तः	ज	न	न		ख
ब	धि	र				सि	ता	र
र्ग		चि	र	का	लि	क		प
	चि	त		यि			आं	त
	ना			क	पो	त		वा
उ	ब	ट	न			ल	ह	र